एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

राजस्थान की जैव विविधता बनाए रखने में रोहिड़ा का अहम योगदान

(*राकेश चौधरी, ममता नेहरा एवं उम्मेद सिंह)
कृषि महाविद्यालय, बायतु, बाड़मेर
संवादी लेखक का ईमेल पता: rakeshnitharwal9@gmail.com

रोहिड़ा पश्चिमी राजस्थान के प्रमुख वृक्षों में से एक है जो शुष्क और अर्धशुष्क जलवायु में पनपता है। स्थानीय भाषा में इसका प्रचलित नाम रोहिड़ा (रोहेड़ा) तथा वानस्पतिक नाम टेकोमेला अंडूलेटा है। यह मुख्यतरू राजस्थान के बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर, नागौर, जालौर, सिरोही, पाली, चूरु, सीकर एवं झुंझुनू जिले में पाया जाता है। इसके महत्व को समझते हुए एवं संरक्षण हेतु 31 अक्टूबर 1983 को इसके पुष्प को राजस्थान का राज्य पुष्प घोषित किया गया था। मध्य आकार का यह वृक्ष समतल मैदानों, पहाड़ी ढलानों एवं घाटियों में पाया जाता है। रेगिस्तान में दूर–दूर तक पसरी रंगहीन रेत के धोरों से सटे मैदानी इलाकों में जनवरी से अप्रेल माह तक रंगों की बौछार कर देने वाला यह वृक्ष प्रकृति की ओर से जीव–जगत को दिया गया अनुपम उपहार है। इसकी लकड़ी 100–200 वर्षों तक खराब नही होती है और इसका फर्नीचर काफी मजबूत और टिकाऊ होता है इसलिए इसे मरुशोभा या राजस्थान का सागवान भी कहा जाता है।

यह वृक्ष 15 से 50 सेंटीमीटर तक वर्षा वाले क्षेत्रों में अपना अस्तित्व बनाये रखता है, साथ ही गर्मियों में 40 से 50 डिग्री सेल्सियस तापमान में भी हरा–भरा बना रहता है। यह शुष्क और अर्धशुष्क क्षेत्रों में पाया जाने वाला पतझड़ वाला वृक्ष है, किंतु इस पर वर्ष के अधिकांश महीनों में पत्तियाँ रहती है तथा बहुत कम समय के लिए पूरी तरह पत्तियों से रहित रहता है। इसलिए इसको सदाबहार अथवा अर्ध–सदाबहार वृक्ष कहा जाता है। इसकी शाखायें जमीन की ओर नीचे झुकी हुई होती है तथा इन पर छोटी–छोटी पत्तियाँ लगती है। ये पत्तियाँ लंबी एवं आगे का भाग नुकीला होता है, इसके फल कुछ मुड़े हुए होते है एवं बीज बालदार होते है। इन्हीं बालों के कारण यह हवा के साथ उड़कर दूर–दूर के क्षेत्रों में फैल जाता है। इस पर सर्दियों के मौसम में फूल आते है। इसके फूल पीले, नारंगी और लाल रंग के होते है तथा उनकी आकृति घंटी के समान होती है।

जैव विविधता बनाए रखने में रोहिड़ा का योगदान निम्नलिखित है–

◊ इसके फूल कुछ वृक्षों में एक वर्ष में एक बार जबकि अधिकांश में दो बार आते है। इसके फूल गंधहीन होने के बावजूद इसमें फूलों के आने पर मधुमक्खियाँ, तितलियाँ और बहुत सारें रसभक्षी कीट व पक्षी रस चूसने के लिए इसके चारों तरफ मंडराते रहते है। वही जब चारे की कमी रहती है उसी समय इसके फूल आते है जिनको बकरी बड़े चाव से खाती है। इसके फूलों का उपयोग सजावट के रूप में भी करते है।

◊ इसका औषधीय उपयोग में बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। इसका एक्जिमा तथा त्वचा के अन्य रोगों व फोड़े–फुंसियों के नियंत्रण वाली दवाओं के निर्माण में

उपयोग किया जाता है। लिवर सम्बंधित रोगों के लिए यह विशेष गुणकारी है एवं लीव–52 नामक औषधि में इसका उपयोग किया जाता है। गर्मी तथा मूत्र सम्बन्धी रोगों की दवाओं में भी इसका उपयोग रामबाण है। इसकी छाल से भी बहुत सारी औषधियों का निर्माण किया जाता है।

◊ इसका भौगोलिक रूप से भी बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। इसकी जड़ें गहराई के साथ–साथ जमीन के ऊपरी भागों में जाल की तरह बिछी रहती है, जो भोजन एवं जल ग्रहण करती है। यह न केवल रेगिस्तान की मिट्टी को बांध कर रखती है बल्कि इसके अपरदन को भी रोकती है।

◊ इसकी लकड़ी में सागवान जैसी मजबूती होती है जिसकी वजह से इसकी लकड़ी में दीमक भी नही लगती है तथा 100 वर्षों तक खराब भी नही होती है। इसकी टहनियों से कच्चे घरों के चारों ओर बाड़ लगने के साथ उसकी छत भी बनाते है जो गर्मियों में घर को ठंडा एवं सर्दियों में गर्म रखने में सक्षम है।

रोहिड़ा का प्रवर्धन एवं खेती कैसे करे

- मुख्य रूप से इसका प्रवर्धन बीज से किया जाता है। जिसके लिए किसी प्रकार के पूर्व उपचार की आवश्यकता नहीं होती है। इसके बीजों को तीन से चार घंटे तक ठंडे पानी में भिगोने से इसकी अंकुरण क्षमता बहुत अच्छी हो जाती है। इस विधि से रोहिड़ा का प्रसार बहुत धीमी गति से होता है।
- इसके प्रसार व प्रवर्धन को बढ़ाने के लिए के लिए आर्य और शेखावत (1986) द्वारा एक सफल ऊतक संवर्धन तकनीक का विकास किया गया है। इसके लिए रोहिड़ा के पोधें (एक्सप्लांट्स) से 8 से 10 मि॰ मी॰ लम्बाई की कली को मुराशिगे और स्कोग्स के मीडिया में रखें, साथ ही मीडिया में नेफथलीन एसिटिक एसिड/इण्डोल ब्यूटायरिक एसिड (0.5–1.0 मिलीग्राम प्रीति लीटर) मिलाए जिससे जड़ों का निर्माण होगा जबकि कैलस के लिए 2,4–D एवं इण्डोल एसिटिक एसिड को मीडिया में मिलाए जिससे बहु प्ररोह पोधें प्राप्त कर सकते है।
- कीनेटिन/बेंजाइलडेनाइन (1 मिलीग्राम प्रति लीटर) के उपयोग से पौधों के प्ररोहों को विभेदित किया जाता है, जबकि बीएपी 15 से 25 प्ररोहों के विभेदन को प्रेरित करने में सबसे प्रभावी होता है।

खतरे में है राजस्थान का राज्य पुष्प रोहिड़ा

निम्नलिखित कारणों की वजह से राजस्थान का राज्य पुष्प खतरे में है–

➢ इंसानों द्वारा अपने फायदे के लिए रोहिड़ा की अंधा–धुँध कटाई करना, जिससे इसके अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगा है तथा जैव विविधता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

➢ खेती में आधुनिकीकरण व ट्रैक्टर का चलन बढ़ना, जिसकी वजह से नये अंकुरित पौधे एवं पुराने पौधों की जड़े भूमि की सतह से बाहर निकल जाती है जिससे पौधे सुख कर नष्ट हो जाते है।

➢ चारागाहों में पशुओं की खुली चराई के कारण नए अंकुरित पौधों को पशु खा लेते है, यही कारण है कि नव अंकुरित एवं युवा पौधों की संख्या बहुत कम देखने को मिलती है।

➢ शहरीकरण बढ़ने और वन्य क्षेत्र घटने से भी इन पौधों की संख्या में भारी गिरावट आई है जो इसके अस्तित्त्व के लिए एवं जैव विविधता के लिए बहुत बड़ा खतरा है।

राज्य पुष्प को बचाने के उपाय

- इस वृक्ष के सुरक्षा, संरक्षण और इसकी वंशवृद्धि चक्र को बनाए रखने की आवश्यकता है ताकि न केवल रेगिस्तान का प्राकृतिक संतुलन बना रहे, बल्कि आने वाली पीढ़ी भी इस वृक्ष का भरपूर लाभ उठा सके।
- इस वृक्ष को गौचर, खाली भूमि, औरण व अन्य भूमियों पर ज्यादा से ज्यादा संख्या में लगाने का प्रयास करने की आवश्यकता है।
- इनकी संख्या बढ़ाने के लिए केवल सरकार पर निर्भर नही रहे, बल्कि समाज को भी आगे बढ़कर अपना योगदान देने की जरुरत है।
- विद्यालयों व महाविद्यालयों में रोहिड़ा का गॉर्डन बनवा, ताकि बच्चे राज्य पुष्प का महत्व समझ सके।